This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3016**

Unique Paper Code : **2051301** **F-5**

Name of the Paper : **Ritikaleen Kavya**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **III**

समय : **3 घंटे** पूर्णांक : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. 'देव' की शृंगार-भावना का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

'मतिराम' की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए। 14

2. 'बिहारी' के काव्य-सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

'घनानंद' के काव्य में प्रेम-व्यंजना पर प्रकाश डालिए। 14

3. 'गिरिधर कविराय' के काव्य का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'भूषण' की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए। 14

P.T.O.

4. निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) सप्रसंग व्याख्या लिखिए :

सकल सिंगार साज संग लै सहेलिन कों,

सुंदरि मिलन चली आनंद के कंद कों।

कवि मतिराम मग करति मनोरथनि

पेख्यो परजंक पै न प्यारे नंदनंद कों।

नेह ते लगी है देह दाहन दहत गेह,

बाग को बिलोकि द्रुम बेलिन के बृंद कों।

चंद को हँसत तब आयो मुखचंद अब,

चंद लाग्यो हँसन तिया के मुखचंद कों॥

अथवा

कोऊ कहौ कुलटा, कुलीन-अकुलीन कहौ,

कोऊ कहौ रंकिनी कलंकिनी कुनारी हौं।

कैसो परलोक, नरलोर, बर लोकन मैं,

लीन्हीं मैं अलीक लोक-लीकन तें न्यारी हौं।

तन जाहि, मन जाहि, देव गुरुजन जाहि,

जीव किन जाहि, टेक टरति न टारी हौं।

वृंदावन वारी बनवारी की मुकुट वारी,

पीतपटवारी वाहि मूरति पै वारी हौं।

अथवा

साईं सब संसार में, मतलब का व्यवहार

जब लगि पैसा गांठ में, तब लगि ताको यार

तब लगि ताको यार, संग ही संग में डोलै

पैसा रहा न पास, यार मुख सों नहिं बोलै

कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई

बिनु बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोइ साईं॥

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए :

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।

त्यौं इन आंखिन बानि अनोखी अघानि कहूं नहिं आनि तिहारियै।

एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयो सुजान। सकोच और सोच सहारियै।

रोकी रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै॥

उपर्युक्त छंद में अभिव्यक्त प्रेम के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झाईं परत, स्याम हरित दुति होइ।

—उपर्युक्त छंद का भाव-वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

कंदमूल भोग करें कंद मूल भोग करें,

तीनि बेर खाती सो तो तीनि बेर खाती हैं।

भूषण सिथिल अंग, भूषण सिथिल अंग,

बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं।

भूषण भनत सिवराज बीर तेरे त्रास

नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं॥

—उपर्युक्त छंद में अलंकार-सौंदर्य को विश्लेषित कीजिए। 9, 9

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

(क) 'गिरिधर कविराय' की काव्य-भाषा।

अथवा

'मतिराम' के काव्य में शृंगारिकता।

(ख) 'बिहारी' के काव्य में सौंदर्य-चेतना।

अथवा

'देव' के काव्य में भक्ति और नीति। 8, 7